Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of HIstory
H.D. Jain College, Ara.
P.G. Sem. I, CC-I (22-24).

इतिहास लेखन / इतिहास-शास्त्र (Historiography) :- इससे दो चीजों का बोध होता है—

(i) किसी विषय के इतिहास से सम्बंधित एकत्रित सामग्री एवं
(ii) इतिहास के विषय एवं क्रिया पद्धति का अध्ययन।

इतिहासकार, इतिहासशास्त्र का अध्ययन विषयवार करते हैं; जैसे - भारत का इतिहास, जापानी साम्राज्य का इतिहास आदि। इतिहास लेखन निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है। मानव समाज के क्रिया-कलापों का क्रमबद्ध विवरण हमें 500 ई॰पू॰ से ही प्राप्त हो सका है। सबसे पहले इतिहास-लेखन का क्रमबद्ध विवरण यूनानी विद्वान हेरोडोटस के द्वारा किया गया था। उसने 500 ई॰पू॰ से लेखन कार्य शुरू किया था। इस प्रकार हेरोडोटस को ही प्रथम ऐतिहासिक लेखक के रूप में जाना जाता है। हेरोडोटस के बाद यूनान के लेखक थ्यूसीडाइडस का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

वहीं 19वीं शताब्दी में 'रैन्क नामक व्यक्ति ने इतिहास को वैज्ञानिक आधार पर लिखकर अपनी रचना को जर्मनी में प्रकाशित करवाया था। फिर दुनिया के अन्य देशों विशेषकर भारत, फ्रांस, इटली, अरब आदि में इतिहास-लेखन आरंभ हुआ।

वर्तमान में ऑगस्ट कॉम्टे का प्रत्यक्षवाद इतिहास-लेखन प्रचलन में है। क्योंकि इसमें वैज्ञानिक आधार पर इतिहास-लेखन किया जाता है।

प्रो॰ मार्विक, इतिहास की आवश्यकता के लिए तर्क देते हैं कि 'अतीत का ज्ञान समाज के लिए आवश्यक है अतीत के ज्ञान के बिना हम पहचान के बिना होंगे, हम समय के अंतहीन समुद्र में खो जायेंगे।

(2) भारतीय इतिहास लेखन की आधुनिक धाराओं का परीक्षण

→ यह सत्य है कि, समय के साथ-साथ इतिहास की रूप रेखा बदलती रहती है। यह परिवर्तनशीलता दोहरी है एक ओर समय के साथ-साथ नई धाराएं बनती है और वे इतिहास का हिस्सा बन जाती है, तो दूसरी ओर पुरानी धारणाओं की भी नई-नई व्याख्याएं, नए इतिहासकारों द्वारा नए स्रोतों के आधार पर नई खोजों एवं बदलते अनुभव के आधार पर की जा सकती है। नित नए प्रयोग की बदलती सोच की वजह से इतिहास में अनेक आधुनिक धाराओं का समावेश हुआ, जो निम्नलिखित है —

(1.) वर्तमान से जोड़ना → अब इतिहास लेखन काल समय अतीत का वर्णन वर्तमान समस्याओं एवं परिप्रेक्ष्य को आधार बनाकर किया जाता है, जबकि परम्परागत ऐतिहासिक लेखन में अतीत पर ही जोर दिया जाता था। इस प्रकार के अध्ययन से एक लाभ यह होता है कि हम इतिहास को अतीत, वर्तमान व भविष्य तीनों से जोड़कर किसी घटना का निष्कर्षात्मक व विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

(2.) राजनीतिक इतिहास के स्थान पर सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक इतिहास लेखन पर जोर देना → इतिहास लेखन की आधुनिक धाराओं में यह प्रमुख है; क्योंकि परम्परागत इतिहास लेखन में रणनीति को इतना प्रमुख व महत्वपूर्ण पक्ष बिल्कुल अनछुए रह जाते है। फलतः हमारा अध्ययन सम्पूर्णता नहीं ले पाता। अब राजनैतिक इतिहास के स्थान पर इतिहास के अन्य पक्षों पर भी जोर दिया जा रहा है। इतिहास के सभी पक्षों पर प्रकाश पड़ने से इसे ज्यादा खिलकर बनाया जा सकता है।

(3.) उपाश्रित इतिहास लेखन (सब-अल्टर्न थ्योरी) — परम्परागत इतिहास लेखन में सदैव उच्च वर्ग एवं इतिहास को ऊपर से ही देखने की कोशिश की गई। उन्होंने शासक वर्ग, अमीर उमरा वर्ग का/ फिर राष्ट्रीय आंदोलन के महानायकों

→ के जीवन व उनके ही कार्यो को ज्यादा प्रमुखता देते हुए उनके महत्व को रेखांकित किया है और मुख्य अध्ययन से अपना मुह मोड़ रखा है, किंतु वर्तमान समय में प्रचलित उपाश्रित लेखन में इतिहास को नीचे से देखने पर जोर दिया जाता है।

(4.) नारीवादी इतिहास लेखन :- परम्परागत इतिहास लेखन में पुरुष प्रधानता की वजह से महिलाओं की भूमिका को नजर अंदाज किया जाता रहा है, किंतु वर्तमान में नारीवादी आधुनिक धारा का प्रचलन होने से इतिहास के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों की भूमिका का विश्लेषण किया जाता है। अभी तक स्वतंत्रता संग्राम में नारी भूमिका पर इतना ज्यादा जोर नहीं दिया गया था, परंतु वर्तमान में हो रहे अधिकांश शोध कार्यों व इतिहास लेखन में इस बिन्दु पर जोर दिया जा रहा है।

(5.) श्रमिक इतिहास लेखन → आधुनिक धाराओं में यह भी है कि, वर्तमान इतिहास लेखन में पूंजीपति व धनाढ्य वर्ग के साथ-साथ श्रमिक वर्ग को भी महत्ता प्रदान की है। अब लिखे जाने वाले इतिहास में यह माने जाने लगा है कि अर्थव्यवस्था के सफल संचालन हेतु पूंजीपतियों के साथ-साथ श्रमिकों का भी इतना ही योगदान रहता है।

(6) साम्राज्यवादी / राष्ट्रवादी इतिहास की बजाए मार्क्सवादी इतिहास-लेखन :- आधुनिक धाराओं से पूर्व के लेखन में मार्क्सवादी अर्थात् भौतिकवादी धारणा को इतना महत्व न था, जितना की अब के इतिहास लेखन में है।

(7) कृषक इतिहास लेखन :- भारतीय इतिहास लेखन की आधुनिक धाराओं में यह देखने को मिलता है कि अब कृषकों पर भी बराबर का इतिहास लिखा जाता है पहले

→ पहले कृषकों को एक निम्न/गौण तत्व मानते हुए उन्हें केवल गौण महत्व का व्यक्ति माना जाता था और उनके द्वारा किए गए विद्रोहों एवं आंदोलनों को इतना महत्व नहीं दिया गया, किंतु अब आधुनिक इतिहास लेखन में उनकी महत्ता को स्वीकार किया गया है।

(8) अन्तर्विषयक उपागम → पूर्व के इतिहास लेखन की रचना में केवल ऐतिहासिक तत्वों का वर्णन किया जाता है और इतिहास की रचना कर दी जाती, किंतु अब एक नई धारा का जन्म हुआ है, वह है - विषयों के मध्य अंतर्संबंध यानि अब इतिहास को विदित समय उसका अन्य विषयों से तादात्म्य स्थापित किया जाता है। यही कारण है कि अब इतिहास में न केवल राजनीतिक घटनाओं का अपितु आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नागरिक, भौगोलिक आदि पक्षों का भी अध्ययन किया जाता है।

(9.) शहरी इतिहास:- आधुनिक धारा के इस बिन्दु के तहत इतिहास लेखन करते समय सभ्यता के विकास, नगरीकरण, शहरी उद्योग धंधे एवं जनसाधारण पर उसके प्रभाव आदि का अध्ययन किया जाता है। जबकि पूर्व के ऐतिहासिक लेखनों में इनकी महत्ता न थी।

(10) मौखिक इतिहास:- वर्तमान इतिहास लेखन में इस की प्रवृत्ति का बोलबाला है कि इतिहास में मौखिक तत्वों/तथ्यों तथा दृष्टांतों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो। ऐसा करने से पूर्व वर्तमान में लिखित इतिहास पूर्व के ऐतिहासिक लेखन से कहीं ज्यादा सार्थक व रुचिकर है।

→ इसके अलावा तार्किकता का समावेश

→ पर्यावरण इतिहास

→ ऐतिहासिक भूगोल